SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

Hkme.Myhdj.k d ifjç{; e fgUnh lkfgR; vkj lpkj ekè;e

ufnuh frokjh] (Ph.D.), शोध निर्देशिका, हिंदी विभाग
शासकीय बिलासा कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत
jf'e ik.M;] शोधार्थी, हिंदी विभाग
अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
ufnuh frokjh] (Ph.D.),
शोध निर्देशिका, हिंदी विभाग
शासकीय बिलासा कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत
jf'e ik.M;] शोधार्थी, हिंदी विभाग
अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय,
बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत
shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 31/01/2023
Revised on : -----
Accepted on : 07/02/2023
Plagiarism : 01% on 31/01/2023

Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment
Overall Similarity: 1%
Date: Jan 31, 2023
Statistics: 12 words Plagiarized / 1509 Total words
Remarks: Low similarity detected, check with your supervisor if changes are required.

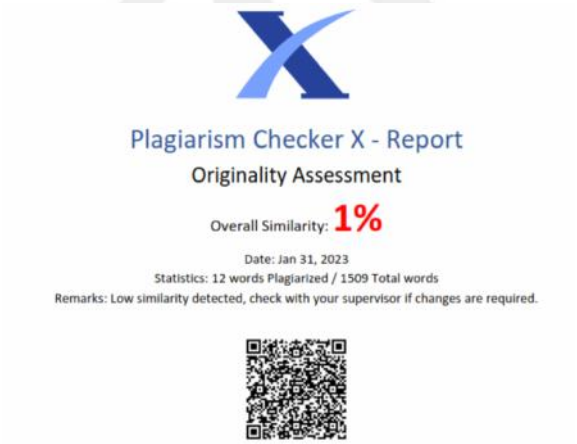

'kks/k lkj

सर्वप्रथम यह जानना आवश्यक है कि भूमण्डलीकरण की क्या अवधारणा है?

भूमण्डलीकरण वह प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से सम्पूर्ण विश्व की अर्थव्यवस्था को संसार की अर्थव्यवस्था के साथ एकीकृत करना है। वस्तुओं, सेवाओं, व्यक्तियों और सूचनाओं का राष्ट्रीय सीमाओं के आर–पार स्वतंत्र रूप से संचरण ही वैश्वीकरण या भूमण्डलीकरण कहलाता है। भूमण्डलीकरण विश्व ग्राम की संकल्पना से जुड़ा हुआ है। भारत में 1991 ई. में सरकार ने व्यापारिक नीतियों में सुधार–परिष्कार करके भारतीय अर्थव्यवस्था को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा लायक बनाने हेतु उदारीकरण की नीति को लागू किंया। इस तरह भारत में 1990 ई. के बाद घोषित रूप से भूमण्डलीकरण लागू हुआ। भूमण्डलीकरण रूपी वाहन अपनी यात्रा सुचारू रूप से जारी रखने के लिए भाषा और संस्कृति की सड़कों या रास्तों का उपयोग करता है। भूमण्डलीकरण भारत के आर्थिक और सामाजिक ढाँचे को आशा से अधिक प्रभावित किया, लेकिन समय के साथ इनमें परिवर्तन आने लगे। आर्थिक उदारीकरण और भूमण्डलीकरण ने एक नये पूंजीवाद के रूप को जन्म दिया, जो कि देश के लिए हितकर तो नहीं हुआ। इन्हीं पूंजीवादियों के लिए हमारी सरकार को अपनी नीतियों में बदलाव लाना पड़ा, जिसमें कहा गया ''स्वास्थ्य, गरीबी और शिक्षा, आदमी की व्यक्तिगत जिम्मेदारी होगी, न की सरकार की जिसकी आलोचना भारतीय कवियों एवं लेखकों ने अपनी–अपनी भाषा के माध्यम से पुरजोर किया और करना भी चाहिये कहा जाता है, जो काम तलवार नहीं कर सकता, उसे कलम बखूबी करता है इसलिए जब–जब परिवेश साहित्य को प्रभावित किया है

तब–तब साहित्य भी परिवेश के ऊपर अपना असर डाला है एक ओर भूमण्डलीकरण ने भाषा को तकनीकी रूप से समृद्ध किया है वहीं दूसरी ओर मातृभाषा पर विदेशी भाषाओं का प्रभाव भी दिखाई पड़ता है। साहित्य के क्षेत्र में भूमण्डलीकरण ने पूंजीवादी मानसिकता की अहमियत बढ़ा दी है और पारम्परिक नैतिकतावादी साहित्य जो तुलनात्मक दृष्टि से कम उत्पादक होने के कारण उपेक्षित होने लगे हैं। दूसरी तरफ समाज के दर्पण के रूप में साहित्य भी तो संचार माध्यम ही है जो सूचनाओं का व्यापक संप्रेषण करता है। साहित्य की तुलना में संचार माध्यमों का ताना–बाना अधिक व्यापक एवं जटिल हैं, क्योंकि वे तुरंत और दुगामी असर करते हैं।'' परिणामस्वरूप संचार माध्यमों के अनुरूप भाषा में भी नए शब्दों वाक्यों अभिव्यक्तियों और वाक्य संयोजन की विधियों का समावेश हुआ है, इस सबसे हिंदी भाषा के सामर्थ्य में वृद्धि हुई है। संचार माध्यम यदि आज के आदमी को पूरी दुनिया से जोड़ते हैं तो वे ऐसा भाषा के द्वारा ही करते हैं।

e[; 'kCn
fgUnh lkfgR;] lapkj ek/;e] Hkwe.Myhdj.k-

çLrkouk

''भूमण्लीकरण'' का पर्यायवाची शब्द है– वैश्वीकरण, जिसे अंग्रेजी भाषा में ''ग्लोबलाइजेशन'' कहा जाता है। भूमण्डलीकरण व्यापक विषयक नियमों की वैश्विक एकता के लिए लायी गयी प्रक्रिया है, जो विश्व के लोग कंपनियाँ तथा विविध राष्ट्रों की सरकारों का कार्य करती हैं। उत्पाद, विचार, दृष्टिकोण तथा अन्य सांस्कृतिक आयामों का यह एक साझा मंच है। भूमण्डलीकरण विविध राष्ट्रों के लोगो, कम्पनियों तथा सरकारों के एकत्रीकरण की ऐसी प्रक्रिया है जो अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार तथा निवेश द्वारा चलायी जाती है और सूचना प्रौद्योगिकी से पोषित होती है। इस प्रक्रिया का परिणाम पर्यावरण, संस्कृति राजनीति व्यवस्था, आर्थिक विकास तथा तरक्की और विश्व भर के मनुष्य के सामाजिक कल्याण पर होता है।''

समसामयिक भूमण्डलीकरण की अवधारणा नितांत आधुनिक जीवन की परिघटना है। आज का भूमण्डलीकरण एक ऐसी आर्थिक परिघटना हैं जिसमें वैश्विक अर्थ–व्यवस्थाओं का एकीकरण संभव हुआ है। भारतीय संदर्भ में भूमण्डलीकरण का अर्थ है– विदेशी कंपनियों को भारत की विभिन्न गतिविधियों में निवेश करने की अनुमति देकर अर्थ व्यवस्था को विदेशी निवेश के लिए खोलना।

भूमण्डलीकरण के विस्तार में सूचना और तकनीकी क्रांति का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भूमण्डलीकरण एक तकनीक संचालित प्रक्रिया है जिसने सूचना और समय के प्रवाह की भौगोलिक दूरियों को कम कर विभिन्न अर्थ–व्यवस्थाओं को परस्पर नजदीक ला दिया है। सूचना चाहे आंकड़ों, आवाज या विडियो किसी भी रूप में हो तत्काल विश्व के एक कोने से दूसरे कोने में पहुंच जाती है। सूचना, तकनीक और संचार क्रांति के कारण ही सेवा क्षेत्र अर्थ–व्यवस्था का प्रमुख हिस्सा बन सका है और इसका वैश्विक आकार संभव हो सका है। साहित्य में भूमण्डलीकरण की बात की जाये तो साहित्य समाज का दर्पण होता है। समाज में घटित घटनाएँ साहित्य में साकार रूप में प्रतिफलित होता है। आज का दौर भूमण्डलीकरण का दौर है, जिसे वैश्वीकरण, बाज़ारीकरण आदि के नाम से भी जाना जाता है। आज कविता, उपन्यास, नाटक, आलोचना, जनसंचार माध्यमों पर बाज़ारवाद का व्यापक प्रभाव है।

Hkwe.Myhdj.k dk fgUnh lkfgR; ij çHkko

भूमण्डलीकरण के कारण जो साहित्य में प्रभाव पड़ा है उसे जानने के लिये हमें हिन्दी साहित्य के इतिहास और भूमण्डलीकरण के दौर के साथ ही साथ आधुनिक दौर के साहित्य पर तुलनात्मक अध्ययन की आवश्यकता होगी।

साहित्य समाज की बिखरी हुई इकाईयों को एक स्थान पर केन्द्रित कर देता है। अपने अनुभव और

लोक–दर्शन के आधार पर साहित्यकार अपनी रचना में किसी भी ऐसी बात को नहीं छोड़ता जो समाज के हित के लिए आवश्यक हो। सत्य तो यह है कि साहित्य में समाज के सन्दर्भ की भाँति ही उसकी कुरूपता का भी सुन्दर रूप में चित्रण किया जाता है। यदि समाज में किसी भी प्रकार का परिवर्तन एवं बदलाव आये तो साहित्यकार उसी बदले हुए स्वरूप के साथ अपनी रचना करता है। बात की जाये तो हिन्दी साहित्य में आदिकाल, भक्तिकाल एवं रीतिकाल की तो उस उस समय की अधिकांश रचनाएँ पद्यात्मक रूप में थी। रीतिकाल में वातावरण के साहित्य में थोड़ा अंतर पाया जाता है। साहित्य में बहुत दिनों तक मंगलाचरण का प्रचलन था, कवि अपने काव्य का आरम्भ अपने देवता की स्तुति से करते थे लेकिन अब यह परिपाटी समाप्त हो गई है। हिन्दी में राष्ट्रीय कवि मैथिलीशरण गुप्त परंपरा के अंतिम कवि थे। साहित्यिक रचना कार्य के संदर्भ में देवस्तुति अभिन्न अंग हुआ करता था पर यह समाप्त हो चुका है। भूमण्डलीकरण तथा वैश्वीकरण ने समकालीन लेखकों की मानसिकता में खुलापन है। खुली कविताएँ छोटी कहानियाँ, लय मुक्त दोहे, उपन्यासों के लेखन में आ रही कमी, शब्द चयन भी हल्के हो चुके हैं, ये सभी वैश्वीकरण के कारण भाषाई संक्रमण ही इसका कारण है। निश्चित रूप से भूमण्डलीकरण से समाज के प्रत्येक हिस्से में इतने बदलाव आये कि सारी दुनिया ''विश्व ग्राम'' हो चुका है। साहित्य के मूल स्वरूप में बदलाव आने का केवल यही एक कारण है क्योंकि इसी कारण से साहित्यकारों एवं लेखकों की सोच में प्रभाव पड़ा है। जिस सोच से पूर्ववर्ती साहित्यकार अपनी लेखनी चलाते थे कदाचित वह सोच ही समाप्त हो चुकी की सोच में भौतिकवादी विचारधारा ने अपना स्थान बना लिया है। समाज कल्याण सर्वजनहिताय की अवधारणा लेकर चलने वाले लेखन एवं साहित्य अब भूमण्डलीकरण की चकाचौंध से अपनी प्रसिद्धि को सर्वोपरि मानने लगे हैं।

Hke.Myhdj.k vkj tulpkj ekè;e

भूमण्डलीकरण ने विगत दो दशकों में भारत जैसे महादेश के समक्ष जो नई चुनौतियाँ खड़ी की हैं उनमें सूचना विस्फोट से उत्पन्न हुई अफरा–तफरी और उसे सँभालने के लिए जनसंचार माध्यमों के पल–प्रतिपल बदलते रूपों का महत्वपूर्ण स्थान है। इसमें संदेह नही कि वर्तमान संदर्भ में भूमण्डलीकरण का अर्थ व्यापक तौर पर बाज़ारीकरण है। हिन्दी संचार माध्यमों में प्रमुख है – हिन्दी पत्रकारिता हिन्दी सिनेमा, हिन्दी रेडियो, हिन्दी वेब दुनिया, हिन्दी न्यूज चैनल, हिन्दी विज्ञापन हिन्दी ई–पत्रिका, हिन्दी किताबें, कम्प्यूटर, मोबाईल आदि।

अगर सम्पूर्ण विश्व में नजर दौड़ा कर देखें तो ज्ञात होता है कि जनसंचार माध्यमों ने वैश्वीकरण को ऐसी हवा दी कि यह जंगल में आग की तरह फैल गई।

''सूचना एवं संचार प्रणाली किसी भी व्यवस्था के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। इंटरनेट, मोबाईल, टेलीफोन, कम्प्यूटर इत्यादि उपकरणों के बिना तो वैश्वीकरण की कल्पना नही की जा सकती। तात्पर्य यह है कि वैश्वीकरण को बढ़ावा देने के लिए इन सभी उत्पादों का अहम योगदान है। इंटरनेट का तो अर्थ ही यह है कि सूचनाओं के आदान–प्रदान से सम्पूर्ण विश्व को एक दूसरे के साथ जोड़ना।

हिन्दी किताबें, हिन्दी पत्रिकाएँ, हिन्दी ई–पत्रिकाएँ, शोध पत्रिकाएँ आदि वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी भाषा और संचार माध्यमों के विकास में एक बढ़ता कदम है।

fu"d"k

यह कहा जा सकता है कि भूमण्डलीकरण का प्रभाव परिणाम सकारात्मक और नकारात्मक दोनों है। सम्पूर्ण विश्व के लिए भूमण्डलीकरण की अवधारणा व्यापारिक उदारता, निजीकरण और सांस्कृतिक निकटता पर आधारित है जिसका प्रभाव भारत पर भी पड़ा है। हिन्दी साहित्य भी इससे अछुता नही रहा। जनसंचार का क्षेत्र भी प्रभावित हुआ है। बेशक भारत के लिये भूमण्डलीकरण पूर्णरूप से सकारात्मक नही रहा है। वैश्वीकरण का स्वागत हमें वहीं तक करना चाहिए जहाँ तक वह विचार सूचना, विज्ञान के क्षेत्र में हो।

20वीं शताब्दी के अंतिम दशक में समाज के आर्थिक ढांचे में तोड़फोड़ विचारधारा के संकट और वैश्वीकरण के चलते बन रहे नये सामाजिक यथार्थ को आत्मसात करने की चुनौती ने हिन्दी साहित्य को भी प्रभावित किया है।

lanHkZ lwph

1. चतुर्वेदी रामस्वरूप, *समकालीन हिन्दी साहित्य विविध परिदृश्य,* राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. आलोक, शर्मा ठाकुरदत्त, *हिन्दी पत्रकारिता एवं जनसंचार,* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. कुमार बिजेन्द्र, *हिन्दी पत्रकारिता और भूण्डलीकरण*।
4. वंशी बलदेव, *भारतीय साहित्य कोश*।
5. चमोला दिनेश, *जनसंचार वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं साहित्य परिप्रेक्ष्य*।
6. दाढ़े वीणा, *समसामयिक साहित्य चिंतन और चुनौतियाँ,* अमन प्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करण।
7. दिव्यकीर्ति विकास, *निबंध दृष्टि,* दृष्टि पब्लिकेशन दिल्ली।

****